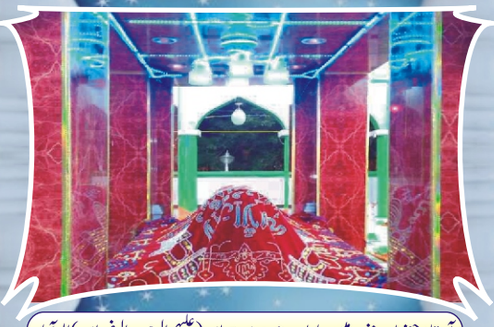

آستانہ حضرات مخدومین سادات چودہوں پیراں (علیہم الرحمۃ والرضوان) الہ آباد

www.syed14peer.com

٧٨٦/٩٢

نقش تحفۂ روحانی وحل المشکلات

مَعَ اسْمِ اللهِ الْمَلِكِ السَّلٰمِ

م ح م د صلی اللہ علیہ وسلم

ح م د م صلی اللہ علیہ وسلم

م د م ح صلی اللہ علیہ وسلم

د م ح م صلی اللہ علیہ وسلم

اس نقش کو دیکھنے والے کی
ہر مشکل حل ہوگی انشاءاللہ

दुरूदे चहेल मीम

स़लातुल मीमिल्अरबईन

दुरूदे चहेल मीम

32

बमौक़ा शव्वाल 1439हि०

बफ़ैज़े रूह़ानी सय्यिदुना मोह़युद्दीन व सय्यिदुना मोईनुद्दीन व ह़ज़रात मख़्दूमीन सादात चौदहों पीराँ رضی اللہ عنہم

2

بِسْمِ اللهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ مَوْلَائِيْ هُوَاللهُ مَعْبُوْدٌ وَّ
مَقْصُوْدٌ وَّمَوْجُوْدٌ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللهِ
اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ دَائِمًا عَلٰى سَيِّدِنَا اَحْمَدَ وَحَامِدٍ
وَّ مَحْمُوْدٍ وَّ سَيِّدِ الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُسْلِمِيْنَ
وَالْمُحْسِنِيْنَ وَالْمُبَشِّرِيْنَ وَالْمُنْذِرِيْنَ وَالْمُتَدَبِّرِيْنَ
وَالْمُخْلِصِيْنَ وَالْمُكَرَّمِيْنَ وَالْمَعْرُوْفِيْنَ
وَالْمُعَاهِدِيْنَ وَالْمُصْلِحِيْنَ وَالْمَشْهُوْدِيْنَ
وَالْمُجِيْبِيْنَ وَالْمُبَارِكِيْنَ وَالْمُعَلِّمِيْنَ وَالْمُظَفَّرِيْنَ
وَهُوَ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللهِ وَعَلٰى وَالِدَيْهِ وَاٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ
وَاَوْلِيَاءِ اُمَّتِهٖ وَكُلِّ اُمَمِهٖ كُلَّ الْحَالِ ○

3

तर्जमाः– अल्लाह के नाम से शुरूअ़ और तमाम तअ़रीफ़ अल्लाह ही के लिए है मेरा मौला वह अल्लाह है जो मअ़बूद है मक़्सूद है और मौजूद है अल्लाह के सिवा कोई इ़बादत के लाएक़ नहीं मोह़म्मद ﷺ अल्लाह के रसूल हैं। ऐ हमारे अल्लाह तू खूब खूब दाइमी दुरूदो सलाम नाज़िल फ़रमा हमारे सरदार बहुत ज़्यादा तअ़रीफ़ करने वाले पर और खूब खूब तअ़रीफ़ करने वाले पर और खूब तअ़रीफ़ किए हुए पर तमाम ईमान वालों के सरदार पर और तमाम मुसल्मानों, एह़सान करने वालों, खुश ख़बरी सुनाने वालों, डर सुनाने वालों के सरदार पर, ग़ौरो फ़िक्र करने वालों, खुलूस़ वालों, मोकर्रम लोगों और स़ाह़िबे इ़रफ़ान लोगों के सरदार पर, अ़हद करने वालों, इ़स्लाह़ करने वालों, मक़ामे शुहूद वालों, ज्वाब देने वालों और बाबरकत लोगों के सरदार पर, तअ़लीम देने वालों और कामयाब लोगों के सरदार पर और वह मोह़म्मद ﷺ अल्लाह के रसूल हैं। (और खूब दुरूदो सलाम और बरकत नाज़िल हो) आप ﷺ के वालिदैन पर, आप ﷺ की आल पर, और अस़ह़ाब पर, आप ﷺ की उम्मत के औलिया पर, और आप ﷺ की सारी उम्मत पर हर दम।

4

फ़ज़ीलत

यह दुरूद चालीस मीम पर मुशतमिल है, जिस के बेशुमार फ़ज़ाएल हैं, जो शख़्स़ इस दुरूद को सुब्ह़ो शाम ११/११/ बार पढ़ने का मअ़मूल बनाएगा तो उसे नबी करीम ﷺ की ज़ियारत ह़ासि़ल होगी उसे स़ब्रो शुक्र के साथ जिन्दगी गुज़ारने की तौफ़ीक़ मिलेगी वह दह्रो कब्रो ह़श्र में हर बला व आफ़त और हर वह़शत व तकलीफ़ से मह़फ़ूज़ रहेगा और उस की जुम्ला मुश्किलात ह़ल होंगी । इन्शाअल्लाहु तआ़ला।

स़लातुल उ़त्क़ाः सय्यिदी हुज़ूर ग़ौसुल अअ़ज़म रदि़यल्लाहु अ़न्हु गुन्यतुत्त़ालिबीन में फ़रमाते हैं कि हम से अबू नस़्र ने ब्यान किया वह अपने वालिद से नक़्ल करते हैं और वह अपनी सनद के साथ ह़ज़रत अनस रदि़यल्लाहु अ़न्हु से रिवायत करते हैं कि रसूले अकरम ﷺ ने फ़रमाया जो शख़्स़ शव्वाल के किसी दिन या रात में आठ रकअ़तें यूँ पढ़े कि हर रकअ़त में सूरए फ़ातिह़ा के बअ़द १५ बार सूरए इख़्लास़ पढ़े नमाज़ से फ़ारिग़ होने के बअ़द ७० बार सुब्ह़ानल्लाह पढ़े और ७० बार दुरूद शरीफ़ पढ़े उस ज़ात की क़सम जिसने मुझे सच्चा नबी बना कर भेजा है जो शख़्स़ भी यह नमाज़ पढ़ेगा अल्लाह तआ़ला उस के दिल में इल्मो ह़िक्मत के सर चश्मे

5

जारी करदेगा उस की ज़बान पर भी यही चीज़ जारी होगी, उसे दुन्या भर की बीमारियों और उनके इ़लाज का इ़ल्म अ़त़ा फ़रमाएगा उस ज़ात की क़सम जिसने मुझे बर ह़क़ नबी बना कर भेजा है जो आदमी इस ब्यान किए हुए त़रीक़े के मुत़ाबिक़ यह नमाज़ पढ़ेगा आख़िरी सिज्दे से सर उठाने से पहले अल्लाह तआ़ला उसे बख़्श देगा अगर फ़ौत हो जाए तो शहीद बख़्शा हुवा फ़ौत होगा, जो शख़्स़ सफ़र में यह नमाज़ पढ़े अल्लाह तआ़ला उस पर सफ़र में चलना और मन्ज़िल तक पहुँचना आसान करदेता है अगर क़रज़दार हो तो अल्लाह तआ़ला क़रज़ से नजात देगा अगर ह़ाजत मन्द हो तो अल्लाह तआ़ला उस की ह़ाजत पूरी फ़रमाएगा, उस ज़ात की क़सम जिसने मुझे सच्चा नबी बना कर भेजा है जो आदमी यह नमाज़ पढ़े अल्लाह तआ़ला क़ियामत के दिन उसे हर ह़र्फ़ और हर आयत के बदले जन्नत में एक "मख़रफ़ा" अ़त़ा फ़रमाएगा अ़र्ज़ किया गया या रसूलल्लाह ﷺ मख़रफ़ा क्या है आप ﷺ ने फ़रमाया जन्नत में बाग़ात हैं उसके एक दरख़्त के नीचे सवार सौ साल तक चलेगा लेकिन ख़त्म न होगा, अल्लााह तआ़ला हमें इस नमाज़ को अदा करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए और इस के फ़ुयूज़ो बरकात से माला माल फ़रमाए। आमीन! (गुन्यतुत्त़ालिबीन स़फ़ा ६८६)